चीनी निर्यात को बढ़ावा देने की रणनीति पर होगा मंथन

दिलीप कुमार झा
मुंबई, 28 अक्टूबर

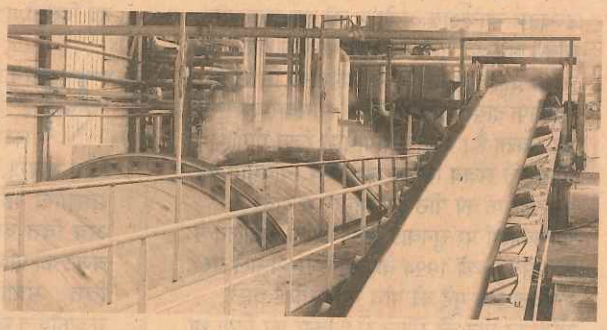

400 से ज्यादा चीनी उत्पादक और मध्यस्थ सोमवार को मुंबई में हो रहे हैं एकत्रित

अक्टूबर से शुरू होने वाले चालू पेराई सीजन में भारत के चीनी निर्यात को बढ़ावा देने की रणनीति के लिए 400 से ज्यादा चीनी उत्पादक और मध्यस्थ सोमवार को मुंबई में बैठक कर रहे हैं। मार्च 2018 में सरकार ने न्यूनतम निर्देशात्मक निर्यात कोटा (एमआईईक्यू) के तहत 20 लाख टन चीनी निर्यात को मंजूरी दी थी। इसे सितंबर तक पूरा किया जाना था। लेकिन इसके तहत बहुत कम मात्रा में निर्यात हो पाया। यह देखते हुए सरकार ने अगस्त में इसकी समय सीमा तीन महीने बढ़ाकर दिसंबर तक कर दी थी। भविष्य में निर्धारित समय के भीतर समान मात्रा में आयात करने की शर्त पर एमआईईक्यू के तहत 'शून्य शुल्क' पर चीनी निर्यात की अनुमति दी जाती है।

भारतीय चीनी मिलों और मध्यस्थों ने अब तक आपूर्ति की अधिकता की वजह से कमजोर वैश्विक दामों के कारण 5-6 लाख टन के ऑर्डर ही पूरे किए हैं। भारत में चीनी उद्योग एक करोड़ टन के पिछले बचे हुए स्टॉक से गुजर रहा है। इसके अलावा अक्टूबर 2018 से सितंबर 2019 के पेराई सीजन में 3.2 करोड़ टन और उत्पादन का अनुमान है। इसके मद्देनजर एमआईईक्यू के तहत चीनी की पूरी मात्रा का निर्यात करने के लिए रणनीति तैयार करना महत्त्वपूर्ण है। चीनी सीजन 2017-18 (अक्टूबर-सितंबर) में भारत का उत्पादन देश की वार्षिक खपत 2.5 करोड़ टन के मुकाबले 3.225 करोड़ टन दर्ज किया गया था।

इस कार्यक्रम के बारे में अखिल भारतीय चीनी व्यापार संघ (एआईएसटीए) के अध्यक्ष प्रफुल्ल विठलानी ने कहा कि इस सम्मेलन से चीनी क्षेत्र को कई प्रकार से मदद मिलेगी। भारत के चीनी निर्यात के संबंध में योजना बनाने के लिए इस कार्यक्रम में 400 से अधिक खरीदारों और विक्रेताओं के भाग लेने की उम्मीद है। बंदरगाहों और गुणवत्ता के सर्वेक्षणकर्ता न केवल अपने कार्यक्षेत्र की विशेषज्ञता साझा करेंगे बल्कि सवालों के जवाब देने के लिए भी उपलब्ध होंगे।

चीनी मिलों को आधिक्य स्टॉक से छूटकारा दिलाने के लिए पिछले कुछ महीनों के दौरान सरकार ने कई प्रोत्साहनों की घोषणा की है। दिलचस्प बात यह है कि पाकिस्तान भी इसी तरह की आपूर्ति की अधिकता का सामना कर रहा है और इसलिए वह लगभग 15 लाख टन चीनी का निर्यात करना चाहता है। भारतीय निर्यातकों के लिए यह एक अच्छी खबर है कि इस साल ब्राजील के चीनी उत्पादन में कमी आने का पूर्वानुमान है क्योंकि इस दक्षिण अमेरिकी देश की सरकार अपने तेल बिल में कटौती करने के लिए एथनॉल उत्पादन को बढ़ावा दे रही है। यूरोप और ऑस्ट्रेलिया को लू से जूझना पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप उनके संभावित चीनी उत्पादन में कमी आने के आसार हैं।

अखिल भारतीय चीनी व्यापार संघ और महाराष्ट्र राज्य सहकारी संघ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किए जा रहे इस कार्यक्रम में प्रमुख सरकारी अधिकारी भी उपस्थिति हो रहे हैं।

Business Standard
29-10-18